Lecture No:- 21

Topic -

(1) Jiva, Bondage,

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy
B.A Part-I (H.)
Paper-I
A.N.D. College Shahpur Patory, Samastipur.

(I) Ans :-) भारतीय दर्शन में बन्धन (Bondage) का अर्थ निरंतर जन्म-ग्रहण करना तथा संसार के दुःखों को झेलना है। भारतीय दार्शनिक होने के नाते जैन भी बंधन के इस सामान्य विचार को अपनाता है।

जैनों के (अनुसार) मतानुसार बंधन का अर्थ जीवों को दुःखों का सामना करना तथा जन्म-जन्मान्तर तक भटकना कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में जीव को दुःख का सामना करना जीवों को दुःख की अनुभूति होती है, तथा उसे जन्म-ग्रहण करना पड़ता है।

यद्यपि जैन दर्शन भारतीय

P.T.O.

दर्शन में वर्णित बंधन के सामान्य विचारों को मानता है, फिर भी उसके बंधन संबंधी विचारों की कुछ विशिष्टता है। इस विशिष्टता का कारण जैनों का जगत और आत्मा के प्रति व्यापक विचार कहा जा सकता है।

जैन दार्शनिकों ने जीवों को स्वभावतः अनन्त कहा है। जीव स्वभावतः पूर्ण है। उसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द आदि पूर्णताएँ निहित हैं।

पर बंधन की अवस्था में सारी पूर्णताएँ ढँक लेता है। उसी प्रकार बंधन की अवस्था में आत्मा के सारे स्वभाविक गुण अभिभूत हो जाते हैं। जीव शरीर के साथ संयोग का सामना करता है। शरीर के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित होने का कारण है।

शरीर का निर्माण पुद्गल

P.T.O.

कणों से होता है। अज्ञात से अभिभूत रहने के कारण जीव में चार प्रकार की

वासनाएँ निवास करने लगती है। क्रोध, मान, लोभ और माया। कुप्रवि कुप्रवृतियों से वशीभूत होकर जीव और शरीर के लिए लालायित रहता है और पुद्गल कणों को अपनी आकृष्ट करता है चुम्बक की तरह जो लोहे के कण को अपनी ओर खींचता है। कुप्रवृतियों को 'कषाय' कहते है।

जीव किस प्रकार पुद्गल कण को अपनी ओर आकृष्ट करेगा, यह जीव के पु पूर्वजन्म के कर्म पर निर्भर करता है। इस प्रकार जीवों के शरीर का रूप रेखा कर्मों के द्वारा ~~निश्चित निश्चित~~ निश्चित होती है।

जैनों ने अनेक प्रकार के कर्मों को भ माना है। प्रत्येक कर्म का नामकरण फल के अनुरूप होता है। 'आ कर्म' उस कर्म को कहा जाता है जो मनुष्य को आयु निर्धारित करता है।

~~End~~ END